अध्याय – प्रथम
शोध परिचय

अध्याय – प्रथम

शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना :–

शिक्षा का आशय उस शिक्षा से है, जिसे व्यक्ति नित्य नये–नये अनुभवों के द्वारा जन्म से मृत्यपर्यन्त प्राप्त करता है। जब शिक्षा को इस अर्थ में लिया जाता है तो कहा जाता है कि, शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है इस प्रकार की शिक्षा व्यक्ति सभी औपचारिक तथा अनौपचारिक साधनों से प्राप्त करता है।

व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में पर्यावरण के साथ अंतक्रिया करते हुए अनेकानेक अनुभव प्राप्त करता है। इन अनुभवों से जो ज्ञान उसे प्राप्त होता है वही व्यापक अर्थ में शिक्षा है। विद्यालय जीवन में प्राप्त शिक्षा भी इस व्यापक शिक्षा का एक अंग है। इस प्रकार शिक्षा पूरी तरह व्यावहारिक तथा जीवनपयोगी होती है। इस प्रकार की शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति अपने पर्यावरण से समायोजन करना सीखता है।

शिक्षा को तीन रूपों में प्रयुक्त होते हैं –

1. ज्ञान के रूप में
2. एक विषय के रूप में
3. एक प्रक्रिया के रूप में

वर्तमान में शिक्षा की स्थिति को देखने पर इसमें क्रांति की आवश्यकता दृष्टिगोचर होती है। सर्व शिक्षा के अतंर्गत बच्चो का नामांकन तथा अपव्यय रोधन के अतिरिक्त महत्व पूर्ण उददेश्य गुणात्मक शिक्षा प्रदान करना भी हैं।

अध्याय – प्रथम

शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना :–

शिक्षा का आशय उस शिक्षा से है, जिसे व्यक्ति नित्य नये–नये अनुभवों के द्वारा जन्म से मृत्यपर्यन्त प्राप्त करता है। जब शिक्षा को इस अर्थ में लिया जाता है तो कहा जाता है कि, शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है इस प्रकार की शिक्षा व्यक्ति सभी औपचारिक तथा अनौपचारिक साधनों से प्राप्त करता है।

व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में पर्यावरण के साथ अंतक्रिया करते हुए अनेकानेक अनुभव प्राप्त करता है। इन अनुभवों से जो ज्ञान उसे प्राप्त होता है वही व्यापक अर्थ में शिक्षा है। विद्यालय जीवन में प्राप्त शिक्षा भी इस व्यापक शिक्षा का एक अंग है। इस प्रकार शिक्षा पूरी तरह व्यावहारिक तथा जीवनपयोगी होती है। इस प्रकार की शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति अपने पर्यावरण से समायोजन करना सीखता है।

शिक्षा को तीन रूपों में प्रयुक्त होते हैं –

1. ज्ञान के रूप में
2. एक विषय के रूप में
3. एक प्रक्रिया के रूप में

वर्तमान में शिक्षा की स्थिति को देखने पर इसमें क्रांति की आवश्यकता दृष्टिगोचर होती है। सर्व शिक्षा के अतंर्गत बच्चो का नामांकन तथा अपव्यय रोधन के अतिरिक्त महत्व पूर्ण उददेश्य गुणात्मक शिक्षा प्रदान करना भी हैं।

इसके लिये प्रत्येक विषय में विद्यार्थियो के शिक्षा के उददेश्य की पूर्ति के हेतु नए उपागमों की खोज करना तथा विद्यार्थियों के हित में शोध करना मूलभूत आवश्यकता बन गई है।

1.2 विभिन्न शिक्षा आयोग

1.2.1 कोठारी कमीशन (1964 - 66)

कोठारी कमीशन में सामाजिक अध्ययन पढ़ाने का उद्देश्य छात्र को पर्यावरण का ज्ञान मानव संबंधों को समझने की शक्ति और कुछ अभिवृत्तियों तथा मूल्यों को जो कि लोगों राज्य, राष्ट्र और विश्व के मामले में बुद्धिमतापूर्वक भाग लेने के लिए अपरिहार्य है। सामाजिक अध्ययन, पाठ्यचर्चा का संगठन, इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र और अर्थशास्त्र द्वारा प्राप्त ज्ञान और कौशल को एक साथ रखने के हेतु प्रदान किया गया है।

सामाजिक अध्ययन के निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं:–

1. एक विश्व की नई अवधारणा की ओर आकर्षित करना।
2. जिन देशों का अध्ययन कराया जा रहा हो उनकी सामाजिक और राष्ट्रीय एकता पर बल दिया जाए।
3. राष्ट्रीय सहयोग और शान्ति की रक्षा पर बल दिया जाए।
4. पाठ्यक्रम के माध्यम से दया, सहकारिता, समूह भावना सहयोग, नेतृत्व साहस, ईमानदारी, सहयोग उत्तरदायित्व आदि वांछित सामाजिक गुण विद्यार्थियों में उत्पन्न हो सकें।
5. धर्म निरपेक्षता, समाजवाद के सिद्धांत स्पष्ट होने चाहिए।

1.2.2 शिक्षा आयोग (1968) के प्रतिवेदन के शब्द में कह सकते हैं :–

"सामाजिक अध्ययन का उद्देश्य छात्रों को उनके वातावरण संबंधी ज्ञान प्राप्त करने, मानवीय संबंधों की समझ और ऐसे अभिमत तथा मूल्यों में सहायक होने से है जो समुदाय, राज्य, राष्ट्र तथा विश्व के मामलों में विवेकपूर्ण ढंग से भाग लेने के लिए उपयोगी है।" भारत में अच्छी नागरिकता तथा भावात्मक एकीकरण की स्थापना के लिए सामाजिक अध्ययन का प्रभावी कार्यक्रम अनिवार्य है।

1.2.3 एन.पी.ई (1986) के अनुसार सामाजिक अध्ययन के उद्देश्य :–

एन.पी.ई 1986 में भी बनाये गये समान केन्द्रित घटक को प्रतिपादित करने के लिए मुख्यतः सामाजिक अध्ययन की जिम्मेदारी है। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास संवैधानिक दायित्व, राष्ट्रीय पहचान के पोषण के लिए आवश्यक विषय वस्तु भारत की सामान्य सांस्कृतिक विरासत, समतावाद, लोकतंत्र और पंथ निरपेक्षता, स्त्री–पुरूष समानता, पर्यावरण का संरक्षण प्रगति में बाधक सामाजिक व्यवधान को समाप्त करना, छोटे परिवार का मानक अपनाना और वैज्ञानिक दृष्टिकोंण अपनाना तथा विकसित करना।

इसमें प्राकृतिक पर्यावरण की जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और अन्य जीव हैं, उनकी रक्षा एवं संवर्धन करें तथा प्राणीमात्र के प्रति दयाभाव रखें।

इस प्रकार कुछ केन्द्रित घटकों को विद्यालयी पाठ्यचर्चा में समुचित रूप से समाविष्ट करना आवश्यक है। प्रयत्न यह है कि इस प्रकार के घटक राष्ट्रीय भागीदारी की दृष्टि और मूल्यों को उत्पन्न करने में सहायक हों।

1.2.4 राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा 1988 के अनुसार सामाजिक विज्ञान शिक्षण का लक्ष्य

राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा 1988 के अन्तर्गत सामाजिक विज्ञान का अध्ययन विद्यार्थियों को ऐसे जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनाने में सहयोगी सिद्ध होता है, जो राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में अपना अधिक सहयोग दे सकते हैं। सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन का सर्वप्रथम लक्ष्य विद्यार्थियों को अपने भौगोलिक और सामाजिक परिवेश के अतीत और वर्तमान का ज्ञान कराना है। सामाजिक विज्ञानों के शिक्षण के प्रभावकारी पाठ्यक्रमों द्वारा बच्चों में सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक संस्थाओं के माध्यम से होने वाली जन जीवन संबंधी सामाजिक मूल्यों और दृष्टिकोंणों के प्रति अर्न्तदृष्टि के विकास में सहायक होने चाहिए। यह कल के उभरते नागरिकों का समाज, राज्य, राष्ट्र और व्यापक रूप से विश्व के क्रियाकलापों में प्रभावशाली भूमिका के लिये अनिवार्य है।

सामाजिक विज्ञान के शिक्षण से बच्चों को भारत की सांस्कृतिक संपदा की पहचान कराने तथा अवांछित रूढ़ियों से मुक्ति दिलाने में विशेषतः सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में समर्थ होने चाहिए। यह विद्यालयों का उत्तरदायित्व है कि वे हमारे विद्यार्थियों में संकीर्ण भावना को मिटा सकें तथा ऐसा प्रयत्न करे कि प्रत्येक विद्यार्थी में सामाजिक तथा आर्थिक पुननिर्माण के महत्वपूर्ण कार्य में प्रतिबद्धता के साथ भाग

लेने की भावना का विकास हो। विश्व की जातियों सहनशीलता और क्षमता तथा शान्ति और आंतरिक संगीत की भावना को उत्पन्न करने के अपने राष्ट्रीय लक्ष्य के प्रति भी बच्चों में आस्था उत्पन्न करनी चाहिए। अतः सामाजिक विज्ञान के शिक्षण का उद्देश्य मानवता, धर्म निरपेक्षता, समाजवाद और जनतंत्र के मूल्यों और आदर्शों का प्रसार होना चाहिए। इससे न्यायपूर्ण विश्व व्यवस्था, आर्थिक और सामाजिक मूल्यों की वृद्धि, हिंसा के शमन और भौगोलिक निर्भता की वृद्धि के प्रमुख मूल्यों को प्राप्त करने के लिए अनिवार्य ज्ञान तथा दृष्टिकोंण विकसित होना चाहिए।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा 1988 में इस योजना का अनुशरण किया गया और सामाजिक विज्ञान का उद्देश्य विद्यार्थियों को ज्ञान से सज्जित कर उनमें अभिरूचि उत्पन्न करके समाज में विभिन्न भूमिका के काम करने के लिए तैयार करता है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् 2000 में सामाजिक विज्ञान का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण बताया है। परम्परागत रूप से विद्यालय में सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम में इतिहास, भूगोल और नागरिक शास्त्र विषय शामिल किए जाते थे क्योंकि उन्हें मानव समाज के विकास का देशकाल और एक दूसरे के संबंध में विभिन्न आयामों से अध्ययन करा पाने में आधारभूत सामग्री समझा जाता था। धीरे-धीरे अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र के संघटकों को भी शामिल कर लिया गया। सामाजिक विज्ञान का अध्यापन विद्यालयी शिक्षा के प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर सामान्य शिक्षा के एक संघटक के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इससे मानव परिवेश को पूरी तरह से

समझने और अपेक्षाकृत व्यापक परिपेक्ष्य करने में मदद मिलती है।

"The main aim of social studies is to present social structure and social process to children & thus to prepare them for social change" ....NCERT.

1.2.5 राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा 2005 के अनुसार

ज्ञान के पुष्टिकरण व औचित्य को स्थापित करने की प्रक्रिया में जिन अवधारणाओं व अर्थों का उपयोग किया जाता है, उनके आधार पर भी ज्ञान का वर्गीकरण किया जा सकता है। प्रत्येक का अपना "अलोचनात्मक चिन्तन" ज्ञान को जाँचने व उसकी पुष्टि करने का तरीका और अपने प्रकार की रचनात्मकता होती है।

सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी की अपनी अवधारणाएँ होती है। उदाहरण के लिए समुदाय, आधुनिकता, संस्कृति, आस्मिता और राजनीतिक सामाजिक विज्ञानों का लक्ष्य मनुष्यों और समाज में मौजूद मानव समूहों की एक सामान्य और समीक्षात्मक समझ विकसित करना है। सामाजिक विज्ञानों का सरोकार सामाजिक संसार के विवरण उसकी व्याख्या और उसके बारे में पूर्वानुमान लगाने में है। सामाजिक विज्ञानों का सरोकार सामाजिक संसार के विवरण, उसकी व्याख्या और उसके बारे में पूर्वानुमान लगाने से है। सामाजिक विज्ञानों की प्रकल्पना सामूहिक जीवन में मानव व्यवहार के बारे में होती है और उनकी वैद्यता अंततः समाज में किए गए अवलोकन पर भी निर्भर करती है। ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में विज्ञान और सामाजिक विज्ञान लगभग एक

समान होते हैं लेकिन उनमें दो भेद भी हैं, जो पाठ्यचर्चा की योजना बनाने के लिए बहुत ही प्रासंगिक है।

प्रथम सामाजिक विज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन करते है जिसका आधार तक होता है जबकि विज्ञान कारण–प्रभाव के आधार पर काम करता है। दूसरे सामाजिक विज्ञान के निष्कर्ष बहुदा नैतिकता और वांछनीयता के सवाल उठाते हैं जबकि प्राकृतिक घटनाएँ समझी जाती हैं उन पर नैतिकता के सवाल तभी उठाए जाते हैं जब वे मानव के कार्य व्यवहार में शामिल हो जाती हैं। सामाजिक अध्ययन के विभिन्न विषयों में से भूगोल विषय की शाखा को चयनित किया जा रहा है।

1.3 भूगोल विषय का परिचय

भूगोल एक व्यावहारिक विषय है और मानवीय जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है, तथा इसकी सभी उपशाखा अपना स्वअस्तित्व का निर्माण करने लगे हैं। अपने व्यक्तिगत अनुभव, रुचि के आधार पर तथा विद्यार्थियों का इस विषय में कठिनाई अनुभव को ज्ञान करना इसके अध्ययन हेतु उत्प्रेरित करता है।

अतः भूगोल के चयन उपरान्त इस विषय की शाखा में विषय बिन्दु अध्ययन का मुख्य केन्द्र रूप में चयनित किया जाएगा। इसके लिये प्रत्येक विषय में विद्यार्थियो के शिक्षा के उददेश्य की पूर्ति के हेतु नए उपागमों की खोज करना तथा विद्यार्थियो के हित में शोध करना मूलभूत आवश्यकता बन गई है। अन्य विषयों के साथ–साथ सामाजिक अध्ययन का अपना महत्व है। सामाजिक अध्ययन द्वारा विद्यार्थीयों को

इतिहास, भूगोल, नागरीकशास्त्र इत्यादि विषयों का अध्ययन किया जाता हैं।

रेखाचित्र :– सामाजिक विज्ञान का अन्य विषयों से पारस्परिक संबंध

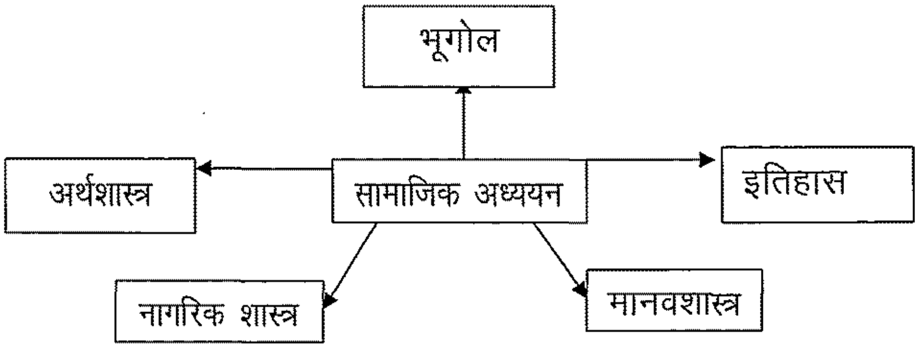

भूगोल विषय विद्यार्थियों की शैक्षिक दृष्टि से तथा दैनिक व्यवहार की दृष्टि से अधिक उपयुक्त है। भूगोल शिक्षण में अन्य विषयों की अपेक्षा अधिक कठिनाई की संभावना होती है। शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को ही भूगोल का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं रहता यही कारण है कि भूगोल का ज्ञान विद्यार्थी को शुद्ध रुप से देना कठिन होता है। प्राथमिक स्तर से ही भूगोल को व्यावहारिक ज्ञान के साथ जोड़ दिया जाये तो इस विषय में कठिनाई उत्पन्न होने की संभावना कम होगी, क्योंकि भूगोल एक ऐसा विषय है जो कि प्रकृति से संबंधित है तथा प्राकृतिक वातावरण में ही व्यक्ति का विकास संभव है, अतः ऐसा संबंध होने के बावजूद भी बालक/बालिका को भूगोल अधिगम में कठनाई उत्पन्न होती है जिसके कई कारण हो सकते हैं।

1.3.1 भूगोल का अर्थ

शाब्दिक अर्थ में भूगोल का अर्थ होना है "गोल पृथ्वी अर्थात् पृथ्वी गोल का वर्णन जो विषय करता है, वह भूगोल

है। अगर अंग्रेजी के शब्द **Geography** की यदि वर्गीकृत करे तो इसके दो भाग होंगे **(Geo + Graphy)** जिसमें Geo का अर्थ है पृथ्वी और Graphy का अर्थ है वर्णन करना। अर्थात Geopraphy का अर्थ हुआ पृथ्वी का वर्णन करना। भूगोल पृथ्वी का वर्णन ही नहीं करता है, अपितु पृथ्वी का वर्णन मानव के संदर्भ में भी करता है। भूगोल मानव का उसके वातावरण के साथ समायोजन का अध्ययन करता है।

शब्दकोष अनुसार–

भूगोल पृथ्वी तल और पृथ्वी पर रहने वाले निवासियों का विज्ञान है।

हार्टशोर्न (1939) के अनुसार

"भूगोल पृथ्वी को मनुष्य की दुनिया की तरह मानकर पृथ्वी का वैज्ञानिक विवरण देने का प्रयास करता है।"

1.3.2 भूगोल का उद्‌भव एवं विकास

आज का भूगोल हजारों वर्षो से संचित ज्ञान का परिणाम है। प्रारंभ में भूगोल का जन्म यात्राओं से हुआ। **थेल्स** प्रथम व्यक्ति था जिसने भूगोल की शुरूआत की, भूगोल का शाब्दिक अर्थ होता है, 'गोल पृथ्वी' माल्टन (1812) ने भूगोल के अंदर पृथ्वी के प्रत्येक भाग की मिट्‌टी, वनस्पति, नदियाँ, जलवायु, पशु और मनुष्य जो एक दूसरे को प्रभावित करते है, इनको सम्मिलित किया है। मैकिण्डर (1887) ने बताया है कि भूगोल का मुख्य उद्‌देश्य मानव और वातावरण के परस्पर सामंजस्य का पता लगाना है। संक्षिप्त में यह कहा जा सकता है कि भूगोल का उद्‌भव यात्राओं से हुआ। तब से लेकर आज तक अनेक भूगोल विद्वानों ने इसके विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

ग्रिफिथ/गिटिश टेलर (1951) के अनुसार

भूगोल का कार्य पृथ्वी के भावी नागरिकों को इस प्रकार प्रशिक्षित करना है कि वे विश्व के विशाल रंगमंच की परिस्थितियों की ठीक–ठीक कल्पना कर सकें, और पर्यावरण की समस्याओं पर बुद्धिमत्ता पूर्वक चिन्तन करने में उन्हे सहायता प्राप्त हो सके।

आधुनिक भूगोल मानव की आर्थिक सामाजिक, राजनैतिक और भौतिक समस्याओं का अध्ययन करता है, साथ ही साथ यह भी अध्ययन करता है कि प्रकृति एवं मानव एक दूसरे के कितने समीप है।

भूगोल एक एकीकृत विज्ञान है। जिस विषय सामग्री का यह विवेचन करता है, वह सामग्री मानव और वातावरण से संबंधित होती है। भूगोल यह खोज करता है कि एक वातावरण का दूसरे वातावरण से क्या संबंध है, साथ ही मानव और भौगालिक वातावरण एक दूसरे पर क्या प्रतिक्रिया करते है। यह मुख्य विचारधारा है। भूगोल वह विज्ञान है जो मनुष्य को वातावरण से जूझने की कला सिखाता है।

1.3.3 भूगोल के प्रकार

मुख्यतः भूगोल को दो भागों में बांटा जाता है :–

1. प्राकृतिक भूगोल
2. मानव भूगोल

1.3.4 प्राकृतिक भूगोल

''पृथ्वी पर पाई जाने वाली आकृतियों को क्रमबद्ध अध्ययन करना तथा उनका आपस में संबंध ही प्राकृतिक भूगोल है।'' प्राकृतिक भूगोल के अंतर्गत पृथ्वी की स्थलाकृति,

जलमंडल, वायुमंडल के साथ–साथ सूर्य मंडल का अध्ययन मानव के संदर्भ में किया जाता है।

प्राकृतिक पर्यावरण का अध्ययन ही प्राकृतिक भूगोल है। जो कि ग्लोब की धरातलीय उच्चावचन, सागर, महासागरों तथा वायु के विवरणों का अध्ययन करता है। प्राकृतिक भूगोल सामान्य रूप में भूविज्ञानों का अध्ययन एवं समन्वय रूप में भूविज्ञानों का अध्ययन एवं समन्वय है। प्राकृतिक भूगोल में प्राकृतिक पर्यावरण के क्रमबद्ध अध्ययन के साथ भौतिक पर्यावरण तथा मानव के मध्य पारस्परिक क्रियाओं का भी अध्ययन किया जाने लगा है। स्पष्ट है कि वर्तमान समय में प्राकृतिक भूगोल के अध्ययन के अंतर्गत स्थलमंडल, जलमंडल, वायुमंडल तथा जीवमंडल के क्रमबद्ध अध्ययन तथा इनके तथ्य पारस्परिक क्रियाओं एवं अन्तर्संबंधों के अध्ययन को सम्मिलित किया जाता है। प्राकृतिक भूगोल के निम्नांकित भाग है :–

- वनस्पति भूगोल
- सागर विज्ञान
- भू–आकृति विज्ञान
- जलवायु विज्ञान
- प्राणी भूगोल

1.3.5 मानव भूगोल : मानव भूगोल को मुख्यतः प्राकृतिक वातावरण और मानव कार्यकलाप इन दोनो के पारस्परिक संबंध के परिणाम के पार्थिव स्वरूप की खोज माना है।

मानव भूगोल की परिभाषायें निम्नलिखित है :–

1. सम्पस् (1971) के अनुसार

‘‘मानव भूगोल क्रियाशील मानव और पृथ्वी के परिवर्तनशील संबंध का अध्ययन।’’

2. हॅटिंगटान (1920) के अनुसार

‘‘मानव भूगोल भौगोलिक वातावरण और मानव कार्यकलाप एवं गुणों के संबंध के फलस्वरूप और विवरण का अध्ययन है।’’

3. जीन (1920) के अनुसार

‘‘मानव भूगोल उन सभी वस्तुओं का अध्ययन है जो मानव कार्य कलाप द्वारा प्रभावित है और जो हमारी पृथ्वी के धरातलीय पदार्थों की एक विशेष कोटि में रखे जाते हैं।’’

मानव भूगोल एक ऐसा विषय है जिसके अंतर्गत सभी मानवीय क्रिया कलापों का विस्तार से वर्णन किया जाता हे। वास्तव में मानव भूगोल की विषय वस्तु के अंतर्गत मानव तथा मानव समूह एक दूसरे के प्रति कितने उत्तरदायी है, इसके अध्ययन पर बल दिया जाता है। इसलिए सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि से मानव भूगोल का स्थान उच्च माना जाता है। विश्व की एकता उसके विभिन्न भागों की निर्भरता नागरिकों के रूप में सही दृष्टिकोंण अपनाना तथा उनके विभिन्न कार्यों तथा संबंधित घटनाओं, तथ्यों कारकों आदि को मानव भूगोल के अध्ययन द्वारा ही समझा जा सकता है। मानव भूगोल के निम्नांकित भाग हैं :–

- आर्थिक भूगोल
- राजनैतिक भूगोल
- ऐतिहासिक भूगोल
- सामाजिक भूगोल

- शहरी भूगोल
- बाजारी भूगोल
- चिकित्सा भूगोल
- कृषि भूगोल

1.3.6 भूगोल शिक्षण की विधियाँ :–

भूगोल का पाठ्यक्रम विभिन्न विषयों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भूगोल प्राकृतिक, विज्ञान और मानवशक्ति दोनों के बीच की कड़ी है। पाठ्यक्रम के अन्य विषयों की भाति भी कुछ निश्चित उद्देश्यों और लक्ष्यों को ध्यान में रखकर पढ़ाया जाता है। किसी भी विषय को पढ़ाने के उद्देश्य ही उसकी शिक्षण विधियों को निर्धारित करते हैं। क्योंकि उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उचित प्रकार की पाठन विधियों का होना आवश्यक है।

भूगोल के अर्थ ज्ञान एवं उसकी विषय–वस्तु के विकास के साथ–साथ भूगोल की शिक्षण विधियाँ भी बदलती गई। विद्यालय के पाठ्यक्रम में भूगोल के अतिरिक्त संभवतः दूसरा कोई ऐसा विषय नहीं है जो इतनी विभिन्न पद्धतियों से पढ़ाया जाता है। भूगोल शिक्षण को केवल पाठ्यसामग्री का ही केवल समुचित ज्ञान नहीं वरन् उस शिक्षा का भी स्पष्ट ज्ञान होना आवश्यक है। भूगोल शिक्षा हर स्तर पर किस विधि के माध्यम से पढ़ाना है इसका ज्ञान नितान्त आवश्यक है। उसे शिक्षण विधियों को निश्चित करने में बालको की आयु, पाठ्यवस्तु की प्रकृति उनकी रूचि एवं उनकी योग्यता का ध्यान रखना अति आवश्यक भी है। भूगोल की शिक्षण विधि एक मिश्रित विधि है।

भूगोल की शिक्षण की प्रमुख विधियाँ निम्नानूसार हैः–

1. निरीक्षण या प्रेक्षण विधि
2. वर्णनात्मक विधि
3. भ्रमणात्मक विधि
4. प्रादेशिक विधि
5. तुलनात्मक विधि
6. आगमन विधि
7. निगमन विधि
8. विचार–विमर्श विधि
9. पाठ्यपुस्तक विधि
10. योजना विधि
11. समस्या विधि
12. प्रयोगशाला विधि या वैज्ञानिक विधि

1.3.7 मानचित्र कला

यूनान काल में " मानचित्र कला का स्वर्णयुग था।आधुनिक युग में मनुष्य के लिए भूगोल विषय में मानचित्र का ज्ञान अतिआवश्यक है। मानचित्र विश्व के भौगोलिक ज्ञान प्राप्ति के सर्वोत्तम साधन है। मानचित्र के द्वारा हम पृथ्वी अथवा उसके किसी भी भाग को समतल धरातल पर चित्रित करते हैं और पृथ्वी पर निवास करने वाले मानव और उसके क्रिया–कलापों का संबंधित अध्ययन करते हैं।

"A map is the beginning of the adventure travel and treasure hunt, was and explorations add open with its unrolling even in your arm chair, a map is magic cartet, taking a mind in a flash what evere you want to go" C.P. Donald

मानचित्र कला के अंतर्गत मानचित्र तैयार करने के वे सभी प्रक्रिया सीमित है, जिसमें भूमि–सर्वेक्षण से लेकर मानचित्र मुद्रण तक क्रियाएँ सम्पन्न होती है, अर्थात् मानचित्र कला मानचित्र व चार्टो को तैयार करने की एक कला है।

मानचित्र शब्द लैटिन भाषा का शब्द है जिसकी उत्पत्ति 'मैपा',का रूपान्तर हिन्दी हैं। जिसका अर्थ ढकने का कपड़ा तथा कपड़े का वस्त्रखंड होता है। अंग्रेजी भाषा में इसे मैप कहा जाता है। 1940 ई. विश्व के मानचित्र के लिए एक विद्वान मिकल ने मापामुण्डी शब्द का प्रयोग किया था वही शब्द "मैप" मानचित्र के रूप में प्रचलित हो गया।

भारत में वस्तुतः मानचित्र नाम का शब्द संस्कृत में नहीं मिलता, केवल चित्र शब्द का ही प्रयोग हुआ है जो बहुअर्थी है। वर्तमान मानचित्र शब्द तो आधुनिक युग में उर्दू के शब्द के पर्याय के रूप में प्रयुक्त हुआ। इस संदर्भ में एफ. जे.

मॉकहउॅवन का कहना है की मानचित्र कला में धरातल के वास्तविक सर्वेक्षण में मानचित्र मुद्रण तक मानचित्र के प्रक्रमों की संपूर्ण श्रंखला सम्मिलित होती है।

1.3.8 मानचित्र की उपयोगिता :-

मानचित्र केवल व्यक्तियों के लिए ही नहीं वरन् जनसाधारण तथा सरकार के लिए भी उपयोगी होता है। विभिन्न प्रान्तों की सीमाएँ, जिले, व्यक्तिगत, संमपत्तियों के विस्तार, यातायात एवं आवागमन मार्गो के विस्तार आदि को जानने एवं उनकों विकसित करने के लिए मानचित्र उपयोगी होते हैं। सैनिकों के लिए युद्ध हेतु, विभिन्न भागों की भौतिक दशा, रक्षा हेतु धरातल के ढाल, गांव, वन, जल प्राप्ति के साधनों आदि का ज्ञान कराने के लिए मानचित्र अत्यंत लाभदायक सिद्ध होते हैं। यात्रियों आदि के लिए पृथ्वी के विभिन्न स्थलों की समस्त मानवीय एवं प्राकृतिक परिस्थितियों का ज्ञान प्राप्त करने में भी मानचित्र सहायक होते हैं।

1.3.9 भूगोल में मानचित्र का स्थान :-

भूगोल में मानचित्र का वही स्थान है जो मानव शरीर में प्राण का है। भूगोल तथा मानचित्र का एक दूसरे से अत्यंत घनिष्ठ संबंध है। यही कारण है कि मानचित्र व भूगोल एक सिक्के के दो पहलू हैं। दोनो का विकास साथ-साथ ही हुआ। भूगोल का पूरा ज्ञान मानचित्र में विद्यमान है।

आधुनिक युग में मानचित्र का प्रयोग अत्यधिक बढ़ गया है

1. किसी स्थान की संबंधित दूरी ज्ञात करना।

2. किसी स्थान की भौतिक एवं सांस्कृतिक जानकारी प्राप्त करना।

3. जलवायु के अध्ययन में सहायक।

4. प्राकृतिक मानचित्र के आधार पर धरातल का बनावट से भी परिचय हो जाता है। जिससे सड़कों, मानव विकास आदि कार्य में मदद मिलती है।

5. विश्व के किसी भी स्थान का अल्प समय में ही ज्ञान होना संभव है।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

1.3.10 मानचित्र की भाषा :–

मानचित्र, मानचित्र की भाषा में ही लिखे जाते हैं। यह भाषा कुछ संकेतों का रूढ चिन्हों की है। जिसे भूगोल के विद्यार्थियों को जानना बहुत ही जरूरी है। यह संकेत ही विभिन्न भौतिक दिशाओं, पर्वत, पठार, मैदान, नदियों, घाटियों को प्रकट करते है तथा सांस्कृतिक मनुष्य के निवास की दिशाएँ, बस्ती के प्रकार, नगर, सड़कें, रेलमार्ग आदि प्रकट करते हैं। यह संकेत कुछ तो अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत होते है। अतः प्रत्येक मानचित्र में उनके संकेत नीचे सूची तथा उनका विवरण रहते हैं। इन संकेतों से लाभ यह है कि मानचित्र में स्थान के अभाव या संकेतों में सभी कुछ सीखा जा सकता है, दूसरा समय की भी बचत हो जाती है।

1.3.11 मानचित्र शिक्षण के उददेश्य

1. मानचित्रों का अनुस्थापन करने की क्षमता एंव दिशाओं को समझने का ज्ञान छात्रों में विकसित करने के लिए। उदाहरण : छात्र एक स्कूल, सड़क, नदी आदि के संकेतों को समझे।

2. छात्रों में यह क्षमता पैदा करना कि वे जिस प्रदेश के मानचित्र का अध्ययन कर रहे हो, उसमें दिये गए संकेतों के आधार पर भौगोलिक ज्ञान को पढ़ सकें तथा स्थान की ऊँचाई रंगों कन्टूर रेखा आदि के आधार पर उस क्षेत्र की सही कल्पना कर सकें।
3. प्रायः विभिन्न उद्देश्यों के लिये विभिन्न प्रकार के मानचित्रों का प्रयोग होता है। छात्रों को इस योग्य बना दिया जाए कि वह कम से कम भूगोल विषय में अध्यापन–अध्ययन तथा पाठ्यपुस्तक में प्रयोग किये जाने वाले मानचित्रों को समझ सकें।
4. विद्यार्थियों को इस योग्य बनाया जाए कि आवश्यकता पड़ने पर दुनिया के किसी भी प्रदेश के, किसी भी अन्य प्रदेश के मानचित्र के आधार पर प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक तुलना कर सकें तथा उसके आधार पर निष्कर्ष निकाल सकें।
5. पुनःश्च जो ज्ञान उन्होनें अर्जित किया है, उसे मानचित्र पर अंकित करने की क्षमता हो जाए।
6. मानचित्र पर मापक को समझ सकें। छात्रों को यह सिखाना कि कौनसा मानचित्र किस मानचित्र पर बना हुआ है। उदाहरण :– 1 सें मी त्र 1 मील अथवा 1 : 63360
7. यह क्षमता उत्पन्न की जाए कि अक्षांश और देशान्तर के आधार पर किसी भी स्थान की दूरी कितनी है, छात्र यह समझ ले।
8. मानचित्र के अध्ययन के आधार पर छात्र स्वयं से निष्कर्ष निकाल सकें।

भूगोल एक व्यावहारिक विषय है जो कि केवल अध्ययन तक ही सीमित नहीं है। छोटी–छोटी बातों में उसे हम अपने **जीवन के** हर पक्ष में देख सकते हैं।

अपने छात्र जीवन के समय में मानचित्र अध्ययन में मैंने कई कठिनाईयों का अनुभव किया। जो मुझे अभी तक विचलित कर रहीं हैं। आज शिक्षक के पद दृष्टि से विद्यार्थियों को उन्हीं समस्याओं का सामना करते देखता हूँ तथा विद्यार्थी इस वजह से अन्य अध्याय में भी कठिनाईयों का सामना करते हैं। अतः भूगोल शिक्षण में संबंधित विद्यार्थियों को अनेक समस्या उत्पन्न होती है तथा इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए यह शोध कार्य करने की प्रेरणा मिलती हैं।

1.4 शोध की आवश्यकता :–

वर्तमान में विद्यालय स्तर पर देखा जाय तो कई विद्यार्थियो को भूगोल विषयको पढने में अनेक समस्याओं का सामना करना पढता है। अधिकत्तर समस्या मापनी संबंधी ज्ञान ,रूढ़ चिन्ह एवं खुना संबंधी ज्ञान में बाती है।

भूगोल विषयमें मानचित्र को अमूल्य महत्व दिया गया। क्यों कि भूगोल में पृथ्वी का वर्णन किया जाता है। पृथ्वी को अनेक क्षेत्रो में मानचित्र बना कर विभाजन किया गया । मानचित्र में किसी क्षेत्र के बारे में पूरी जानकारी होती है। कक्षा में शिक्षक सिर्फ किताबी ज्ञान देते है । जिससे कि छात्रो को मानचित्र का उचित ढंग से प्रयोग करने में समस्या आती है। मानचित्र को पढाते समय शिक्षक यदि उनकी मूलभूत अवधारणाओं को सही तरीके से पढाया तो छात्रो को मानचित्र पठन में समस्याए नहीं आयेगी और भविष्य में वे

कोई भी मानचित्र का अध्ययन आसानी से कर सकेगें। भूगोल विषयका पाठ्यांश पूर्णतः मानवीय जीवन, विविध क्रिया कलाप एवं क्रिया प्रक्रियाओ पर आधारित है। भूगोल विषयमें इन क्रिया कलापो तथा उत्पाद का विभिन्न जानकारी संक्षिप्त रुप में मानचित्र द्वारा दी जाती है।

वर्तमान समय में शिक्षक समय की कमी तथा बढते पाठ्यक्रम के कारण भूगोल विषयबिना कृति तथा बिना तकनीकी इस्तेमाल करते हुए सिर्फ किताब के अनुसार पढाते है । भूगोल विषयमें मानचित्र एक अत्यंत महत्व पूर्ण भाग है। परंतु वर्तमान में जो पढाने का तरीका है उस तरीके के अनुसार विद्यार्थी सिर्फ इसे परीक्षा की द्रष्टि से देखते है और फिर आगे की कक्षा में इसे भूल जाते है।

अतः मानचित्र में पढाते समय उसकी मूलभूत संकल्पनाओ को पढाया जाना चाहिये जिससे उन्हे भविष्य में मानचित्र संबंधित समस्याओ का सामना ना करना पडे।

1.5 समस्या कथन

ग्रामीण क्षेत्र में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को भूगोल अधिगम में आनेवाली कठिनाईयों का अध्ययन

1.6 परिभाषित शब्दावली :-

भूगोल –

हार्टशोर्न (1939)

"भूगोल पृथ्वी को मनुष्य की दुनिया की तरह मानकर पृथ्वी का वैज्ञानिक विवरण देने का प्रयास करता है।"

कार्स रिटर :-

"भूगोल विज्ञान कावह भाग है जो संपूर्ण पृथ्वी का एक संपूर्ण घटक मानने हुए उसके विभिन्न लक्षणों, तथ्यों, एवं संबंधों का अध्ययन करते हुये पृथ्वी का संबंध मनुष्य एवं जगत निर्माण से स्पष्ट करता है।"

ईकरमन (1911)

"भूगोल भूपटल की भौतिक परिस्थितियों का वर्णन व्याख्या और तुलनात्मक अध्ययन करता है और साथ ही मानवीय व्यापारों की विवेचना भी करता है।"

एन.पी.ई. 1986

"इसमें प्राकृतिक पर्यावरण की जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी, और अन्य जीव है उनकी कक्षा एवं संवर्धन करे तथा प्राणी मात्र के प्रति क्या भाव रखें।"

D – 356

मानचित्र –

"निश्चित मापनी के अनुसार धरातल के किसी भाग के लक्षणों के समतल सतह पर निरुपण को मानचित्र की संज्ञा दी है।"

.....फिंच तथा टिवार्था

पृथ्वी अथवा उसके किसी भाग कि प्रकृति एवं वितरण का दिक्काल निश्चित मापक पर सुव्यवस्थित रुप से चित्रित किया हुआ स्वरुप मानचित्र कहलाता है।

अधिगम –

शब्द कोष के अनुसार– अधिगम शब्द का सबसे सटीक पर्यायवाची शब्द सीखना दिया गया है। अन्य अर्थ ज्ञान, विद्या जानकारी आदि से है।

1. स्किनर के अनुसार

"सीखना व्यवहार में उत्तरोत्तर सामंजस्य की प्रक्रिया है।"

2. क्रो व क्रो के अनुसार

"सीखना अनुभव और प्रशिक्षण द्वारा व्यवहार में परिवर्तन है।"

3. एस.के. मंगल एवं पी.ही. पाठ्क के अनुसार

"अधिगम कर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया।"

स्कूल में विद्यार्थियों को सीखने से संबंधित कुछ विशेष अनुभव दिये जाते हैं जैसे पढ़ना, लिखना, निरीक्षण करना उत्सव में भाग लेना आदि। जब उनकों यह अनुभव दिये जाते है तब के अधिगम प्रक्रिया के फलस्वरूप विद्यार्थियों में ज्ञान, बोध, कौशलों, भावनाओं, रूचियों मनोवृत्तियों तथा आदर्श का विकास होता है।

1.7 अध्ययन के उद्देश्य :–

1. कक्षा नवी के विद्यार्थियों को राजनीतिक मानचित्र पठन में आने वाली कठिनाईयों का अध्ययन करना।
2. कक्षा नवी के विद्यार्थियों को भौगोलिक विस्तार मानचित्र में आने वाली कठिनाईयों का अध्ययन करना।
3. कक्षा नवी के विद्यार्थियों को रूढ़ चिन्हों को पढ़ने व लिखने संबंधी आने वाली कठिनाईयों का अध्ययन करना।
4. कक्षा नवी के विद्यार्थियों को मानचित्र भरण में आने वाली कठिनाईयों का अध्ययन करना।
5. अनुदानित और बिना अनुदानित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को मानचित्र में आने वाली कठिनाईयों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.8 शोध परिकल्पना

अनुदानित और बिना अनुदानित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को मानचित्र में आने वाली कठिनाईयों में सार्थक अंतर नहीं है।

1.9 शोध परिसीमाएं

1. शोध कार्य महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के बार्शी ग्रामीण क्षेत्र तक सीमित है।
2. यह अध्ययन भूगोल विषयमें मानचित्र तक सीमित है।
3. यह अध्ययन कक्षा नौवीं के बार्शी तहसील के ग्रामीण क्षेत्र में 120 विद्यार्थियो पर किया गया।